टलेगा कोरिया का खतरा?

करप्शन के गंभीर आरोपों में पद से हटाई जा चुकी पार्क ग्युन-हे की जगह वामपंथी रुझान वाले नेता मून जे-इन साउथ कोरिया के नए राष्ट्रपति चुन लिए गए हैं। इन चुनावों में भ्रष्टाचार के आरोपों से उपजी लोगों की निराशा तो झलकी ही, अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर खड़ी चुनौतियों ने भी खासा योगदान दिया। मून जे-इन ने लोगों में न केवल देश के अंदर सुधार का भरोसा जगाया, बल्कि न्यायपूर्ण समाज की स्थापना का वादा भी किया। हालांकि उनके चुनाव जीतने और राष्ट्रपति पद पर आसीन होने के बाद जिस बात को सबसे ज्यादा रेखांकित किया जा रहा है, वह है नॉर्थ कोरिया को लेकर उनका नजरिया। चुनाव के दौरान भी मून ने यह बात खुलकर कही कि वह नॉर्थ कोरिया के साथ बातचीत के पक्षधर हैं। इसी वजह से विरोधी पक्ष ने उन्हें प्योंगयांग समर्थक वामपंथी कहना शुरू कर दिया था। लेकिन इस प्रचार या दुष्प्रचार के बावजूद उन्हें 41.1 फीसदी वोट मिले, जबकि दूसरे नंबर पर रहे कंजर्वेटिव उम्मीदवार होंग जुन-प्यो को महज 24.03 फीसदी। शपथ लेने के बाद मीडियाकर्मियों से पहली बातचीत में ही मून ने प्योंगयांग जाने की इच्छा जता दी है, जो उनकी सरकार की नीतियों की दिशा का स्पष्ट संकेत है। गौरतलब है कि नॉर्थ कोरिया पिछले एक साल से जिस बदहवासी में मिसाइल टेस्ट और न्यूक्लियर टेस्ट करता रहा है, उससे इस पूरे इलाके में तनाव बना हुआ है। ऐसे में साउथ कोरिया का नेतृत्व अगर उसे बातचीत की प्रक्रिया में शामिल कर पाता है तो यह न केवल उत्तरी चीन सागर के लिए बल्कि पूरी दुनिया के लिए राहत की बात हो सकती है। अमेरिका से दक्षिण कोरिया का पुराना जुड़ाव है और इस देश में अमेरिकी फौज की प्रत्यक्ष उपस्थिति नए राष्ट्रपति की पहलकदमी को एक सीमा से आगे शायद ही बढ़ने दे, लेकिन मून ने सारी बातें अमेरिका से अपने रिश्तों की अहमियत को रेखांकित करते हुए ही की हैं। इससे लगता है कि वे अमेरिका को साथ लेते हुए नॉर्थ कोरिया को मैत्री और सहयोग के धागे में बांधने की राह पर आगे बढ़ेंगे। मौजूदा हालात में ज्यादा उम्मीदें पालना व्यावहारिक नहीं है, फिर भी मून के संकल्प ने बारूद के ढेर पर बैठे इस इलाके में कुछ संभावनाएं तो जगा ही दी हैं।

लौकिक-पारलौकिक मुक्ति के पथ प्रदर्शक

आज भी बुद्ध एशिया की आवाज और विश्व के साकार विवेक हैं। उनका जीवन दर्शन और उनके नैतिक उपदेश विज्ञान के प्रेमी आधुनिक विचारकों को भी बहुत सुहाते हैं क्योंकि उनका दृष्टिकोण तर्कपूर्ण और अनुभवपरक है। उन्होंने भारतीय समाज के जाति भेद को नहीं माना। उनके धर्म और दर्शन का द्वार सबके लिए खुला है। बुद्ध के अनुयायी परम उत्साही और धर्म प्रचार की भावना से ओतप्रोत थे। विविध धर्मों के अनुयायियों में, अपने मूल संघ के सीमित क्षेत्र से संतुष्ट न रह सकने वाले लोगों में वे प्रथम थे। वे बहुत दूर-दूर तक फैल गये। उन्होंने पश्चिम, उत्तर दक्षिण की यात्रा की। वे तिब्बत, ईरान, तुर्की, रूस, पोलैण्ड तथा पश्चिमी जगत के अनेक देशों में गये। वे चीन, कोरिया और जापान गये। वे बर्मा, श्याम और ईस्टइण्डीज तथा उसके आगे तक गये। आज से लगभग 2600 वर्ष पूर्व वैशाख माह की पूर्णिमा बुद्ध के जीवन की तीन महत्वपूर्ण घटनाओं से अर्थात बुद्ध के जन्म, बोध प्राप्ति और परिनिर्वाण से जुड़ी है। बुद्ध ने जिस समय जन्म लिया था, उस समय समाज ऊंच-नीच की परम्परा÷त रूढ़ियों और अनेक तरह के प्रपंचों, अन्धविश्वासों में जकड़ा हुआ था। उन्होंने धर्म के तत्कालीन ठेकेदारों, पुरोहितों को चुनौती दी। पुरोहितों ने वेदों को रहस्य बना रखा था। उन वेदों को, जिनमें प्राचीन हिन्दुओं द्वारा खोजे आध्यात्मिक सत्य संचित हैं। बुद्ध के पास तीव्र मस्तिष्क, यथेष्ट शक्ति और आकाश जैसा असीम हृदय था। वह किसी पर अपना शक्तिपूर्ण अधिकार नहीं चाहते थे। वह मनुष्यों के मानसिक और आध्यात्मिक पाशों को तोड़ डालना चाहते थे। बुद्ध के पास आत्माओं के पाशों को तोड़ फेंकने वाले उपायों को खोज निकालने वाला मस्तिष्क था। उन्होंने जान लिया कि मनुष्य दुख से पीड़ित क्यों होता है और उन्होंने दुख से निवृत्त होने का मार्ग ढूंढ निकाला। बुद्ध ने हमें प्रज्ञा और करुणा का उपदेश दिया। हमारी परख उन मतों से, जिनका हम अनुसरण करते हैं या उन नामों से, जिन्हें हम धारण करते हैं या उन नारों से जिन्हें हम चिल्ला-चिल्लाकर कहते हैं, नहीं होगी, बल्कि हमारे परोपकार के कामों से और भातृ भावना से होगी। आदमी की कमजोरी यह है कि जरा, रोग और मृत्यु के अधीन होते हुए भी वह अज्ञान और अभिमान के कारण रोगी, वृद्ध और मृतक का उपहास करता है।

सभ्यता के दबाव से रुकेंगे अपराध!

निर्भया कांड के चार अभियुक्तों को फांसी पर चढ़ा देने के बाद यह दुनिया सूनी नहीं हो जायेगी। लेकिन एक बर्बर कांड का प्रतिशोध लेने पर भारत के न्यायिक अवचेतन में थोड़ी धूल जरूर जम जायेगी। सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिल्ली हाईकोर्ट द्वारा मृत्युदंड की सजा को बहाल करने से समाज के एक वर्ग को संतुष्टि हुई है कि हमारी न्याय व्यवस्था संवेदनहीन नहीं हुई है और उसने 'जैसे को तैसा' का न्याय देकर भविष्य के सभी ऐसे अपराधियों को चेतावनी दे दी है कि उनके साथ भी दया नहीं बरती जायेगी। लेकिन कौन दावा कर सकता है कि इससे भविष्य की प्रत्येक निर्भया का जीवन सुरक्षित और सम्मानित रहेगा? ऐसा लगता है कि तात्कालिक राहतों की खुशी में हम न्याय व्यवस्था के व्यापक और दूरगामी लक्ष्यों को विस्मृत कर रहे हैं और एक क्रूर समाज को थोड़ा और क्रूर बना रहे हैं। व्यक्तियों के अत्याचार से संस्थाओं की अतिवादिता ज्यादा चिंताजनक है। हम यहां इस प्रश्न का उत्तर नहीं खोज रहे हैं कि निर्भया पर अमानुषिक आक्रमण करने वालों की उचित सजा क्या होगी। निर्भया के साथ जो कुछ हुआ, वह हो चुका है। उसके साथ सामूहिक बलात्कार हुआ और उस पर इतने हिंसक हमले हुए कि उसकी जान चली गयी। निर्भया अब हमारे बीच नहीं है। लेकिन जीवन उसके साथ ही नहीं रुक गया। जीवन का प्रवाह जारी है। भविष्य में और ज्यादा लड़कियां सड़कों पर निकलेंगी। मुख्य चिंता की बात यह है कि उनके इर्द-गिर्द वहशियाना माहौल न बने। इसके लिए हमारी तैयारी क्या है? मानव जीवन के मूल्य के बारे में हम समाज के विभिन्न वर्गों के सदस्यों को किस तरह का मनोवैज्ञानिक शिक्षण प्रदान कर रहे हैं? जो फांसी की सजा के विरुद्ध हैं, वे भावुकता के बरअक्स विचार के पक्ष में हैं। व्यक्ति समाज के साथ क्या करता है, इससे ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि समाज व्यक्ति के साथ क्या करता है। व्यक्ति आमतौर पर शिष्टाचार की सीमा में रहते हैं, पर विशेष परिस्थितियों में वे निरंकुश भी हो उठते हैं। जब सभ्यता की दीवार टूट जाती है, तब अपराध का जन्म होता है। लेकिन अपराधों का बंद न होना व्यक्ति के मनोविज्ञान के बजाय समाज के मनोविज्ञान के बारे में ज्यादा बताता है। एक अपेक्षाकृत सभ्य समाज में अपराध कम होते जायेंगे, एक अपेक्षाकृत असभ्य समाज में वे नये-नये रूपों में सामने आयेंगे। इस आधार पर कहा जा सकता है कि कोई भी अपराध व्यक्ति की विफलता से ज्यादा समाज की विफलता है। लेकिन अपनी ही विफलता पर क्षुब्ध होकर कोई समाज अगर जल्लाद बनने का फैसला करता है तो वह यही साबित करता है कि वह अपने को सुधारने के लिए उत्सुक नहीं है। वह पहले व्यक्ति को हिंसक बनाता है, फिर उसके साथ हिंसक व्यवहार करता है। इस सिलसिले को क्या तोड़ा नहीं जा सकता? कुछ लोग सऊदी अरब का उदाहरण देकर यह सिद्ध करना चाहते हैं कि प्रशासन द्वारा कठोरता से ही अपराधों में कमी लायी जा सकती है। वहां बलात्कार और व्यभिचार के लिए मौत की सजा मुकर्रर है, लेकिन यही सजा शराबखोरी, सहमति-आधारित समलैंगिक रति, डकैती, आगजनी, नशीली दवाएं रखना या वितरित करना, जासूसी आदि के लिए भी है। कोड़े मारना, पत्थर फेंक-फेंक कर जान ले लेना, हाथ काट देना, आंखें निकाल लेना आदि कुछ खास तरह की क्रूरताएं सजा के ज्यादा प्रचलित तरीके हैं। जिस देश में थर्रा देने वाली सजाएं मिलती हों, वहां अपराध कम हों, यह स्वाभाविक ही है। लेकिन इस बात की प्रशंसा करते हुए हम भूल जाते हैं कि सऊदी अरब का समाज कैसा है। वहां उदार लोकतंत्र नहीं, कठिन राजतंत्र है। वहां का संविधान आधुनिक नहीं, मध्ययुगीन है। मानव अधिकारों का सम्मान नहीं है। स्त्री सत्ता का दमन एक व्यापक प्रवृत्ति है, जिसे कानून से भी समर्थन प्राप्त है। स्त्रियां अकेले घर से बाहर नहीं निकल सकतीं। उन्हें ड्राइविंग लाइसेंस हाल में मिलने लगा है, पर वे अकेले कार नहीं चला सकतीं। स्त्री की गवाही का मूल्य पुरुष की गवाही से आधे के बराबर है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर पहरा है। क्या हम अपने देश में वैसा ही समाज और वैसी ही व्यवस्था देखना चाहते हैं? हम सिर्फ ऐसा समाज चाहते हैं, जिसमें अपराध न्यूनतम हों या वह समाज ऐसा भी हो, जिसमें स्त्री-पुरुष के बीच भेदभाव न हो, मनुष्य अपनी सांस्कृतिक स्वतंत्रताओं का निर्भय होकर उपयोग कर सके और तर्क-वितर्क करके सत्य तक पहुंचने की कोशिश कर सके। यूरोप और अमेरिका में बाइबिल की धज्जियां उड़ायी जा सकती हैं और भारत में वेद-शास्त्रों की उच्चता को चुनौती दी जा सकती है। पर जिस देश की दंड व्यवस्था पर हमारे अनेक मित्र मुग्ध हैं, वहां कुरआन की साधारण-सी आलोचना करने पर भी आप की जीभ काटी जा सकती है। जेल के बाहर की दुनिया की तुलना में जेल के भीतर अपराध बहुत ही कम होते हैं, तो क्या हम पूरे समाज को ही एक जेल में बदल दें? यह दुनिया भर का अनुभव है, जिसका भारत अपवाद नहीं है कि सजा की अधिकता या कठोरता से अपराध कम नहीं होते। बेशक भय एक जरूरी निरोधक है। कोई दावा कर सकता है कि हममें से अधिकांश लोग इसलिए अपराध नहीं करते क्योंकि उन्हें सजा से डर लगता है। पर मेरा विश्वास है कि वे सजा से कम, बदनामी और मान-क्षति से ज्यादा डरते हैं। यह सभ्यता का दबाव है जो हमें अपराधी होने से रोकता है। यही वजह है कि अपराध तब सबसे ज्यादा होता है जब हम पर सभ्यता का दबाव सबसे कम होता है। एक अपूर्ण समाज की न्याय व्यवस्था भी अपूर्ण ही होगी। एक आदर्श समाज की न्याय व्यवस्था कैसी होगी, यह हम नहीं जानते, क्योंकि आदर्श समाज कहीं बना नहीं है, पर बनने की प्रक्रिया में है। इस चरण में न्यायपालिका की दुहरी जिम्मेदारी होती है। उसे वर्तमान अपूर्ण समाज की इच्छाओं को भी पूरा करना होता है और साथ ही, भविष्य के उन्नत समाज की ओर जाने की प्रेरणा भी देनी होती है। मैं नहीं समझता कि उच्चतम न्यायालय के इस फैसले से इन दोनों उद्देश्यों की समान रूप से पूर्ति हुई है।

मीडिया : टीवी बहसों की संकीर्णता

अपने चैनल खबर कम देते हैं बहसें ज्यादा। बहसों को भी 'शो' की तरह दिया जाता है. 'शो' में अतिरिक्त प्रदर्शन का तत्व होता है, जिसे एंकर अतिरिक्त उत्तेजना पैदा करके बनाए रखता है. 'शो' में आकर खबर अचानक विचार, और विचार अचानक 'शो' बन जाते हैं. हम विचार नहीं ओपिनियन भी नहीं विचारों या ओपिनियनों के शो को चुनते हैं, चूंकि एंकर इस तरह के शोज के संयोजक होते हैं, सवाल पूछने वाले होते हैं, नतीजे निकालने वाले और आखिरी फैसला देने वाले होते हैं, इसलिए दर्शक समझने लगते हैं कि असली ज्ञानी एंकर ही होते हैं, और कुछ एंकर भी ऐसा मान लेते हैं कि वे ही ज्ञानी हैं, कुछ एंकर तो ऐसे भी हो गए हैं, जो मानते रहे हैं कि वे अपने शो से देश का एजेंडा तय करते हैं, उसे हांकते हैं, उसे दिशा देते हैं. लेकिन जब उनके चैनलों के मालिकों ने किसी कारण से उनको काम से हटा दिया तो मालूम हुआ कि वे न देश चला रहे थे, न समाज को चला रहे थे और कि चैनल ही उनको चला रहा था. हमारा टीवी इसी शोबाजी की प्रक्रिया में खबर का माध्यम न रह कर शो बिज का माध्यम बन गया है। चैनलों के सबसे अच्छे दिन शनिवार और रविवार होते हैं, जब उनको अपने स्टूडियो को फिल्मी दुनिया के हवाले कर देना होता है, या इंपेक्ट फीचर्स यानी किराए के शो के हवाले कर देना पड़ता है।

संकट में आईटी सेक्टर

सुप्राम काट का पपरलस बनाने की एक युक्ति का शुभारंभ करते हुए प्रधानमंत्री ने अपने चिरपरिचित अंदाज में आईटी+आईटी=आईटी का सूत्र प्रस्तुत किया, जिसका अर्थ यह है कि भारत का भविष्य यहां की प्रतिभाओं के सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़ने में ही है।

लेकिन सच्चाई यह है कि भारत का आईटी सेक्टर अभी अपने समूचे जीवनकाल का सबसे बड़ा संकट झेल रहा है। कॉन्सटेलेशन रिसर्च के सीईओ रे वांग के मुताबिक 2020 आते-आते भारत के आईटी सेक्टर में 20 से 30 प्रतिशत स्टाफ की छंटनी हो चुकी होगी। हम यह सोचकर अपने मन को दिलासा दे सकते हैं कि विशेषज्ञों की भविष्यवाणियां अक्सर सही नहीं निकलतीं और रे वांग की बात सही हो तो भी संकट आने में अभी तीन साल बाकी हैं।

लेकिन यह हमारी खामखयाली ही होगी। हकीकत यह है कि भारत की सभी नामी-गिरामी कंपनियां न सिर्फ पिछले एक साल में अपने यहां होने वाली नई नियुक्तियों में कमी ला चुकी हैं, बल्कि इस साल हजारों प्रशिक्षित कर्मचारियों को अपने पे-रोल से हटाने भी जा रही हैं। भारतीय सॉफ्टवेयर इंजिनियरों की बहुत बड़ी एंप्लॉयर समझी जाने वाली कॉग्निजेंट ने पिछले हफ्ते अपने 1000 वरिष्ठ लोगों को अपनी मर्जी से कंपनी छोड़ देने को कहा है।

छंटनी के शिकार ऐसे लोगों की संख्या यहां जल्द ही 6000 पहुंचने वाली है। इन्फोसिस अपने 1000 ऊंचे स्तर के लोगों को कंपनी छोड़न का कह सकता ह, लेकिन इससे पहले इनसे अपने अधीन काम करने वाले उन 10 फीसदी कर्मचारियों की सूची सौंपने को कहा गया है, जिनका कामकाज सबसे कम संतोषजनक है।

विप्रो के सीईओ का कहना है कि कंपनी की आमदनी जल्दी बढ़नी नहीं शुरू हुई तो इस साल उसके 10 प्रतिशत कर्मचारियों को काम छोड़ना पड़ेगा। इतने बड़े पैमाने पर होने जा रही छंटनी की कई वजहें बताई जा रही हैं।

अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर और यूरोप के कई देशों में भारतीय इंजिनियरों को स्थानीय बेरोजगारी का कारण मानकर टार्गेट किया जाना इसकी एक वजह है।

दूसरी वजह के कई सिरे हैं, जिनका संबंध इन्फॉर्मेशन टेक्नॉलजी के स्वरूप से जुड़ा है। यह बाकी उद्यमों के साथ-साथ अपना भी काम आसान बनाती चलती है। अब से पांच साल पहले जिस काम के लिए 100 सॉफ्टवेयर इंजिनियरों की जरूरत पड़ती थी, वह अभी कहीं 10 तो कहीं सिर्फ एक व्यक्ति ही कर डालता है। हम एक ऐसे जानवर की पूंछ पकड़ कर खुद को सूरमा मान बैठे हैं, जो पलक झपकते कहीं और जा चुका है।

समय रहते हमें अपने बौद्धिक श्रम के लिए कुछ और ठीहे तलाशने चाहिए। और जो युवा हर हाल में सूचना प्रौद्योगिकी से ही जुड़ने का मन बनाए हुए हैं, उन्हें कोई ऐसा काम सिखाना चाहिए, जिससे अगले 25-30 वर्षों में उन्हें रोजी-रोटी के लाले न पड़ें।

राशिफल

मेष : आध्यात्मिक सिद्धियां मिलने का योग है। नए कार्य की शुरुआत के लिए शुभ समय नहीं है। प्रवास में आकस्मिक कठिनाइयां आएंगी। क्रोध और वाणी पर संयम रखें।

वृषभ : विदेश में बसनेवाले स्नेहीजनों के समाचार मिलेंगे। आकस्मिक धन लाभ मिलेगा। व्यापारियों के व्यापार में वृद्धि होगी। सामाजिक एवं सार्वजनिक क्षेत्र में यश एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।

मिथुन : आर्थिक लाभ की संभावना है। आज खर्च होगा परंतु वे आपको अनावश्यक नहीं लगेंगे। रुके हुए कार्यों की पूर्णता के लिए मार्ग सरल होंगे। प्रतिस्पर्धियों के समक्ष सफलता प्राप्त करेंगे। क्रोध पर लगाम लगाने की आवश्यकता है।

कर्क : शारीरिक और मानसिक अस्वस्थता आपको बेचैन बनाएंगे, आकस्मिक खर्च होगा। प्रेमीजनों के बीच वाद-विवाद के कारण मनमुटाव होंगे। पेट तथा पाचनतंत्र से सम्बंधित समस्याएं सताएंगी।

सिंह : कुटुंबीजनों के साथ मनमुटाव के अवसर आएंगे। मन में नकारात्मक विचार आने से उदासी अनुभव करेंगें। जमीन, मकान, वाहन आदि के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने के लिए दिन अच्छा नहीं है। नौकरी-पेशावालों को नौकरी में चिंता रहेगी।

कन्या : भाई-बहनों के साथ अच्छी तरह समय व्यतीत होगा और उनके द्वारा लाभ भी मिलेगा। प्रतिस्पर्धियों की चाल निष्फल रहेगी। भाग्यवृद्धि का योग होने पर भी किसी भी कार्य में बिना विचारे कदम उठाने से हानि हो सकती है।

तुला : महत्त्वपूर्ण निर्णय नहीं लेने की गणेशजी सलाह देते हैं। नए कार्य का प्रारंभ न करें। वाणी पर संयम रखने से परिवारजनों के साथ वादविवाद नहीं होगा। आर्थिक लाभ की संभावना है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

वृश्चिक : कोई शुभ समाचार मिलेगा। मित्रों तथा स्नेहीजनों की तरफ से उपहार मिलने से आनंद अनुभव करेंगे। आनंददायक प्रवास होगा। दांपत्यजीवन में मधुरता रहेगी। सामान्य रूप से पूरा दिन खुशहाली में व्यतीत होगा।

धनु : किसी के साथ उग्र तकरार का अवसर आ सकता है। स्वास्थ्य खराब होगा। वाणी और व्यवहार में संयम रखने की गणेशजी सलाह देते हैं। दुर्घटना से बचें। पैसे अत्यधिक खर्च होगा। अदालत सम्बंधी काम-काज में सावधानीपूर्वक कदम उठाएंगे।

मकर : आज का दिन लाभदायक है घर में किसी शुभ प्रसंग के आयोजन की संभावना है। किसी वस्तु की खरीदारी के लिए दिन शुभ है। मित्रों, सम्बंधियों के साथ मुलाकात आनंदित करेगी। सामाजिक क्षेत्र एवं नौकरी व्यवसाय में लाभ मिलेगा।

कुंभ : उच्च पदाधिकारी और बुजुर्ग वर्ग की कृपादृष्टि रहेगी। आपके सभी काम सरलता से सम्पन्न होते हुए प्रतीत होंगे। नौकरी-व्यवसाय के क्षेत्र में परिस्थिति अनुकूल रहेगी। मानसिक रूप से राहत महसूस करेंगे। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। मान-सम्मान बढ़ेगा।

मीन: नौकरी में उच्चपदाधिकारियों के साथ वादविवाद होने से उनकी नाराजगी झेलनी पड़ सकती है। प्रतिस्पर्धी सिर उठाएंगे, नकारात्मक विचारों से मन घिरा रहेगा। सरकार की तरफ से कोई परेशानी खड़ी होगी। संतान के साथ मतभेद बढ़ेगा।

शब्द सामर्थ्य

शब्द सामर्थ्य - 049(Rns)

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. व्याकुल, बेकल, बेकरार (उर्दू) 3. आश्रय, शरण 5. नाता, संबंध 7. आधुनिक इरान की भाषा, फारस का 9. संकल्प, मनौती 10. दर, फाटक, द्वार 12. बुरा एवं निकृष्ट कर्म करने वाला, गुंडा एवं लुच्चा 14. दल में शामिल 16. सिंचाई के लिए बना कृत्रिम जल मार्ग 17. भरोसा, मदद 18. बड़ा राजा, सम्राट, बादशाह 19. एक ग्रह, सप्ताह का एक दिन 20. पत्नी, बीवी 21. गड्ढा, खाई 22. वर, देवता और ऋषियों द्वारा प्राप्त फलसिद्धी.

ऊपर से नीचे

1. कृतघ्न, धोखा देने वाला (उर्दू)2. बेटी की बेटी, नातिन, अस्सी से नौ अधिक 3. एक घर में और एक के ही संरक्षण में रहने वाले लोग, एक ही पूर्व पुरुष में वंशज 4. कलेवा 6. अधीन, अधीनस्थ कर्मचारी 8. प्राप्ति, वस्तु आदि के मिलने का प्रमाण पत्र 9. सामर्थ्य, हिम्मत (उर्दू)10. विजयादशमी के दिन मनाया जाने वाला त्यौहार 11. कहना, उक्ति, दलील, अभियोग 12. वधु 13. मान में कमी करना, प्रतिष्ठा के विपरीत कार्य 15. गहनता, गूढ़ता, गहरा होने का भाव 17. शर्त सहित 18. गौरव, प्रतिष्ठा, मान, सीमा 20. वजन, बोझ.

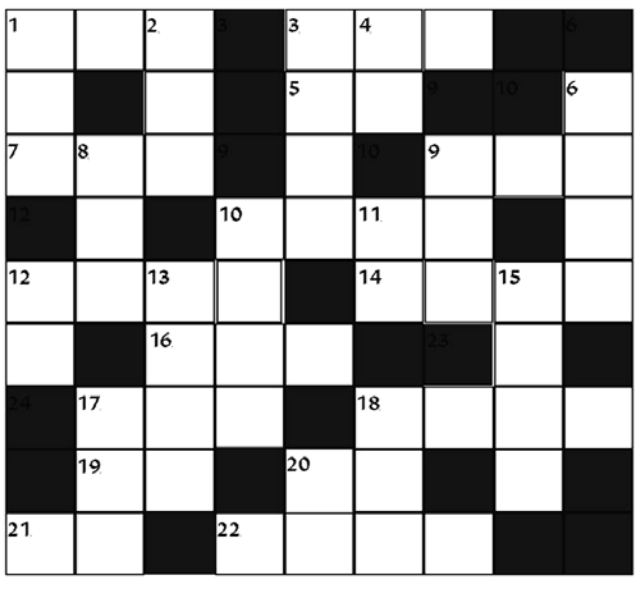

पिछले अंक का हल

रा	ज	नी	ति	■	■	मा	द	क
ह	■	य	■	■	व	न्य	■	त्न
त	ह	त	■	उ	त्स	व	■	■
■	क	■	■	म्र	■	र	■	मा
वि	दा	ई	■	द	■	■	■	ध
चा	र	■	■	रा	ब	ड़ी	दे	वी
र	■	रा	ह	ज	नी	■	व	■
णी	■	■	ल	■	स्ब	■	दा	सी
य	व	नि	का	■	त	र	स	ना

सू-दोकू

		3					7	
9				6		3		8
	7		9		5		6	
						1		9
3		8		7			5	
	1		3		9			7
		2		8		7		
	8				2		4	3
			1					

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

पिछले अंक का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6